भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1331

दिनांक 03 दिसम्बर, 2024

एनडीआरआई, कल्याणी द्वारा अनुसंधान परियोजनाएं

1331. श्री जगन्नाथ सरकार :

क्या **कृषि और किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) कल्याणी, पश्चिम बंगाल में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र और राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) में वर्तमान में कौन-कौन सी अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं;
(ख) देश के पूर्वी क्षेत्र में डेयरी फार्मिंग तकनीकों और उत्पादकता में सुधार लाने में एनडीआरआई, कल्याणी का विशिष्ट योगदान क्या है;
(ग) क्या सरकार की एनडीआरआई, कल्याणी के पूर्वी क्षेत्रीय स्टेशन पर अनुसंधान सुविधाओं का विस्तार करने अथवा नए कार्यक्रम शुरू करने की कोई योजना है; और
(घ) अनुसंधान निष्कर्षों का प्रसार करने और डेयरी पद्धतियों में सुधार लाने के लिए एनडीआरआई, कल्याणी के पूर्वी क्षेत्रीय स्टेशन और पश्चिम बंगाल के स्थानीय डेयरी किसानों के बीच किस हद तक सहयोग हुआ है?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र में चलाई जा रही वर्तमान परियोजनाओं की सूची **अनुबंध-I** के रूप में संलग्न है।

(ख) : भाकृअप- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) के पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, कल्याणी ने भारत के पूर्वी क्षेत्र में डेयरी फार्मिंग की तकनीकों और उत्पादकता में सुधार लाने के लिए प्रमुख भूमिका निभाई है। इसके महत्वपूर्ण योगदान को **अनुबंध-।।** के रूप में संलग्न किया गया है।

(ग) : सरकार ने कल्याणी स्थित पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र में विशेष रूप से ढांचागत सुविधाओं के विस्तार के लिए कोई नई योजना अथवा नए कार्यक्रम की शुरूआत के लिए मंजूरी नहीं दी है। यह केन्द्र भाकृअप- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) के अधिदेश के अनुसार क्षेत्र विशिष्ट समस्याओं के समाधान के लिए कार्य कर रहा है।

(घ) : भाकृअप- एनडीआरआई के पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, कल्याणी ने अनुसंधान निष्कर्षों के प्रसार और डेयरी पद्धतियों में सुधार लाने के लिए पश्चिम बंगाल के स्थानीय डेरी किसानों, विशेष रूप से नदिया जिले में प्रगाढ़ता के साथ सहयोग स्थापित किया है, कृषि परामर्शों के नेटवर्क और कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञों की साझेदारी में प्रदान किए गए विशेषज्ञ मार्गदर्शन के माध्यम से एक लाख से अधिक किसानों ने जिले में कृषि एवं पशु पालन पर जानकारी प्राप्त की है। इस सहयोग से क्षेत्र में डेरी पशु पालन की उत्पादकता और दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

पिछले तीन वर्षों में पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण कार्यक्रमों के अंतर्गत विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से देश के पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों के 8,000 से अधिक किसानों को सीधे लाभ पहुंचाया है। इन पहलों ने आधुनिक और टिकाऊ डेरी पद्धतियों को अपनाने के लिए जरूरी ज्ञान, संसाधनों और तकनीकों से किसानों को लैस करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह सक्रिय भागीदारी पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र की प्रतिबद्धता को, उसके अनुसंधान परिणामों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को सुनिश्चित करके डेरी किसानों की आजीविका में सुधार करने के लिए दर्शाती है।

****

अनुबंध-।

{लोक सभा के दिनांक 03.12.2024 के अतारांकित प्रश्न सं. 1331 का भाग (क)}

1. पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के हरिनघाटा और चकदहा प्रखण्डों में सुनिश्चित बछिया पैदा होने के दृष्टिकोण के साथ डेयरी की गायों में प्रजनन क्षमता में वृद्धि के माध्यम से ग्रामीण किसानों की आजीविका में सुधार।
2. पश्चिम बंगाल राज्य के मूल पशुधन और कुक्कुट आबादी का लक्षण वर्णन। एनबीएजीआर, करनाल के ''एएनजीआर के लक्षण वर्णन और प्रलेखीकरण पर नेटवर्क परियोजना'' के अंतर्गत तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित।
3. प्रौद्योगिकियों के प्रभावी प्रसार के लिए उन्नत पशुपालन और कृषि पद्धतियों पर पशुसखियों को प्रशिक्षित और पुन: प्रशिक्षित करना।
4. उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र/भारत के पूर्वी हिस्से में एकीकृत पशुधन पालन के माध्यम से जनजातीय लोगों की सामाजिक - आर्थिक स्थिति में उत्थान लाना।
5. भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में डेरी पालन के माध्यम से आजीविका में सुधार लाना।
6. असम के लखिमी मवेशियों की क्षेत्र - आधारित संरक्षण इकाई की स्थापना।
7. मशीन लर्निंग (कृत्रिम मेधा) का उपयोग करके विशिष्ट पशु पहचान के लिए चेहरे की छवि-आधारित बायोमीट्रिक पहचान।
8. ब्लैक बंगाल बकरियों में जन्म संबंधी लक्षणों और प्रजनन क्षमता पर प्लेसेंटल विशेषताओं की भूमिका को स्पष्ट करना और उनके सुधार के लिए रणनीतियां।
9. शुक्राणु खुराक के अनुकूलन और मेम्बरेन लक्षित प्रतिऑक्सीकारकों (एंटीऑक्सीडेंटो) के साथ ऑक्सीकर (ऑक्सीडेटिव) तनाव के सुधार के माध्यम से बंगाल बक के वीर्य की निषेचनीयता को बढ़ाना।
10. पशु उत्पादकता में सुधार के लिए प्रारंभिक रूमेन विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अभिनव आहार अनुपूरक का निर्माण।
11. एक संगठित डेरी फार्म में पोषक तत्व समृद्ध चावल पुआल (एनईआरएस) प्रौद्योगिकी का सत्यापन।
12. जर्सी संकर नस्ल के मवेशियों के आहार व्यवहार की आनुवंशिक विविधताओं और उत्पादन तथा प्रजनन प्रदर्शन के साथ उनके संबंधों का मूल्यांकन।
13. प्रोबायोटिक्स और जड़ी-बूटी निर्मित दस्तरोधी (हर्बल एंटीडायरियल) यौगिकों के साथ बछड़े के दस्त का चिकित्सकीय प्रबंधन।
14. देखभाल के स्थान पर गोजातीय कीटॉसिस का पता लगाने के लिए एक त्वरित परीक्षण किट।
15. डेरी आधारित कृषि प्रणालियों के भीतर जैव-उर्वरक अपनाने के लिए सामाजिक - स्थानिक गतिशीलता का आकलन।

अनुबंध-।।

{लोक सभा के दिनांक 03.12.2024 के अतारांकित प्रश्न सं. 1331 का भाग (ख)}

- केन्द्र की एक उल्लेखनीय उपलब्धि, क्षेत्र में डेरी पशुओं की विशिष्ट पोषण संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप स्थान-विशिष्ट खनिज मिश्रण का विकास है। इस पहल ने पशु-स्वास्थ्य और उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार किया है। पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र ने स्थानीय रूप से उपलब्ध गैर-पारंपरिक चारा (फीड) संसाधनों का उपयोग करने और निम्न श्रेणी के चारे (फीड) को उन्नत करने पर भी ध्यान केंद्रित किया है, जिससे पशुओं का आहार सेवन और बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित होता है।

- केंन्द्र ने ढांचागत विकास में कुशल पशु आवास प्रणाली तैयार की है, जिसने पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य और उत्पादकता में योगदान किया है। इसके अतिरिक्त, इसने ब्लैक बंगाल बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान के लिए बकरे, के वीर्य के उत्पादन के माध्यम से बकरी पालन में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे इस नस्ल की आनुवंशिक गुणवत्ता और प्रजनन क्षमता में वृद्धि हुई है। ब्लैक बंगाल बकरियों के मेमनों के लिए दूध के विकल्प के विकास ने उनकी जीवित रहने की क्षमता और वृद्धि को और बढ़ाया है, जिससे अधिक स्वस्थ और मजबूत संतानें पैदा हुई हैं।

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह प्रगति कृषक समुदाय तक पहुंचे, पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र एक मजबूत प्रसार रणनीति का उपयोग करता है। केन्द्र, कृषक-वैज्ञानिक संवाद, किसान मेलों और ऑफ-फार्म दौरों के साथ-साथ नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनों का आयोजन करता है। इन पहलों को ब्रोशरों, मैन्युअलों, मोबाइल अप्लीकेशनों और सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्मों जैसे-प्रिंट और डिजिटल माध्यमों के उपयोग से पूर्ण किया जाता है, जिससे लगातार अद्यतन जानकारी और मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। यह बहु-मार्गीय दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र के अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों के लाभ प्रभावी रूप से अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पहुंच जाएं, जिससे इलाके में पशुपालन क्षेत्र की समग्र उत्पादकता और स्थिरता में योगदान हो।

- इसके अलावा, एनडीआरआई-ईआरएस के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत कार्यरत कृषि विज्ञान केंद्र, नदिया (अतिरिक्त) को क्षेत्र के किसानों और अन्य हितधारकों के बीच विकसित प्रौद्योगिकी का प्रसार करने का दायित्व सौंपा गया है।

****